भाईस्वामी, श्रद्धांजली विशेषाँक

भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 7 | रविवार, 26.7. 98 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मवाह

रक्षाबंधन के शुभाशिष

हमारी प्रत्यक्ष की-
धाम, धामी और मुक्तों को दिव्य मानने की ही निष्ठा
सम्पूर्ण रुप से ही जीवन की अंतिम सांस तक पार उतरे
वही सच्ची रक्षा मांगनी है
और
वैसी (निष्ठा) यदि दृढ़ हुई हो तो-
तुम्हारा 'स्व'—विलीन होकर,
स्वरूपभाव में ही अखंड अनुसंधानरुप से प्रेमपूर्वक रहे
और
विचार से स्वधर्मयुक्त पाँच प्रकार का व्यवहार भी करता रहे।
वहां ब्रह्मशक्ति ही काम करती दिखाई देगी।
उसका मंत्र है—
'सचेतन, सक्रिय, साक्षीभाव'।
वह दृढ़ करते जाना
और
ऐसी जोड़ पक्की करना
व
सुहृद्भाव से वर्तना।
तो,
सभी प्रकार से रक्षा होगी ही होगी।

—प.पू. काकाजी महाराज
28 अगस्त 1980

अलविदा.....भाईस्वामिजी!

[भगवत् कृपा के पिछले अंक में सूचित किए अनुसार पू. भाईस्वामिजी के अक्षरवास निमित्त आए दिव्य संदेश एवं प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी के भावसभर व प्रेरणात्मक निम्न उद्‌गार प्रस्तुत कर रहे है.....]

स्वामिश्रीजी 28-6-98

गुणातीत समाज की जय
मुक्ताक्षरपुरुषोत्तम की जय

आज प.पू. गुरुजी का फोन आया कि प.पू.-भाईस्वामी का हार्ट फेईल हुआ। यह सुनकर–महाराज का एक साधु अक्षरनिवासी हुआ, सो–दिल्ली और लुधियाना जैसे हिन्दी भाषी प्रदेश में महाराज की निष्ठा कराने की सेवा करने वाले की भारी खोट पड़ी–इस कारण खूब दुःख हुआ और आश्चर्य यह हुआ कि उनका स्वास्थ्य तो बिल्कुल अच्छा था। उन्हें महाराज ने अपने पास बुला लिया !

सबसे अधिक तो प.पू. गुरुजी को खूब चिंता व दुःख हुआ होगा; क्योंकि निश्चिंतता से वह (प.पू. गुरुजी) गुजरात आता, तब भाईस्वामी अकेले हाथ मंदिर का कारोबार संभालते और सत्संगियों में मेलजोल रहे, यूं उन्हें संभालने की कला तो उन्हीं (पू. भाईस्वामिजी) की !

तो, **प्रभु** उनकी आत्मा को खूब शांति दें और **गुरुजी में हजार मुक्तों का बल रख दें, जिससे कि अकेले हाथ मंदिर व समाज की परवरिश करने का बल मिले–ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद** !

तुम्हारे ही **पप्पा** के जय स्वामिनारायण !

✡

26-6-98

पू. भाईस्वामी स्वधाम सिधारे–सो, दुःख तो हुआ ही है.... परन्तु उनकी ओर हम सभी को खूब ही नज़र रखनी है ही..... उनकी कमी महसूस होगी ही, पर हम सब को उनके गुणों का विचार करना ही है।

1. कभी भी झूठी ना हो ऐसी उनकी **खानदानी**.....कभी भी अभाव-अवगुण, भावफेर-खटपट, मेरा-तेरा, खींचातानी, इधर-उधर की चुगली-निंदा, अच्छाईपेशी का भाव कभी भी–ख़्वाब में भी दिखाई नहीं पड़ा.....उनकी आँख, कान और जीभ **पवित्र** ही रहे। कैसे वे अनमोल साधु !

2. एक हरिभक्त ने मंदिर में उनकी उपेक्षा करके थोड़ा कुछ कह कर नीचा दिखाया.....पर महाराज-महाराज.....किसी को भी बात तक पता नहीं चलने दी.....वह खानदानी कैसी होगी?

3. दिल्ली मंदिर में-जहां जरूरत पड़े वहां सेवा में पहुँच ही जाते.....हर प्रकार की सेवा वे करते ही थे.....52 वर्ष की उम्र में भी स्टाफ के सेवकों के साथ सहज आत्मीयता निरन्तर रखी....सो, पू. भाईस्वामी जैसी खानदानी प्रगटाने के लिए जरूर ही भजन प्रार्थना करना.....

4. गुरुजी के साथ मैत्री और वफादारी अखंड रख–वह उनकी कैसी खानदानी !

हे संतो ! कोई संपूर्ण नहीं है, पर जिसका जो अच्छा हो वह लेंगे, तो भी हम भरपूर हो जायेंगे.....

तो हे संतों, भाईस्वामिजी के निमित्त सभी इकट्ठे मिलकर सभा में एक घंटा धून्य-भजन करके 5–10 मिनिट इनके गुणों का गान करना।

यही सेवक **साधु हरिप्रसाद** के
जय स्वामिनारायण !

✡

स्वामिश्रीजी 2-7-98
सांकरदा

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय जय जय

प.पू. स्वामिजी स्वरूप मुकुंदजीवनस्वामिजी तथा सभी संत, प.पू. महामुक्तराज मल्कानी साहेब तथा सभी हरिभक्त व मुक्त समाज की सेवा में–

महातीर्थ स्थान सांकरदा से आप सभी को खूब-खूब याद करते हुए सभी संतों, व्रतधारी भाईयों, समर्पित हरिभक्तों तथा मुक्त मंडल की ओर से सदा सेवक **साधु अक्षरविहारी** के खूब ही प्रेम से जय स्वामिनारायण स्वीकारना !

पू. भाईस्वामी की खबर सुन कर खूब खूब दुःख हुआ; क्योंकि हमारे गुणातीत समाज का एक अडीग स्तंभ और हमारे दिल्ली केन्द्र के तो बीम सरीखे संत की भारी खोट पड़ गई।

पू. भाईस्वामी–साक्षात् योगीजी महाराज द्वारा अक्षरधाम से अपने साथ लाए समाज का एक अद्‌भुत और अनोखा विशिष्ट पात्र था। संप, सुहृद्‌भाव और एकता से निर्दोषबुद्धि युक्त अनोखी रीति, नीति व स्थिति का परिचय देता उनका जीवन केवल सेवामय व सभी के लिए आदर्शरूप था।

दिव्य काकाश्री के इस भगीरथ कार्य में
प.पू. गुरुजी के साथ कंधे से कंधा मिला कर,
देहभाव को गिने बिना,
रात-दिन देखे बिना,
दूसरों के अभिप्रायों की परवाह किए बिना,
सिर्फ दिव्य काकाजी व दिव्य हरिप्रसादस्वामिजी को
प्रसन्न करने की लग्न रख कर सेवकभाव से जीवन जीने वाले
दिव्यस्वरूप **'भाई'** को हमारे लाख–लाख वंदन हो !
जय स्वामिनारायण !

✡

श्रीजी बापा-स्वामिबापा मणिनगर
अमदाबाद-380008
28-6-98

प.पू. भाईस्वामिजी के देहविलय से उत्पन्न हुए आप सभी के दुःख में हमारे अंतर की सहानुभूति स्वीकारना !

शास्त्र कहते हैं कि देह नाशवंत है, उसका अंत अनिवार्य है। सो, उसका शोक करना व्यर्थ है और वह समझ हम सभी की चेतना में बसी हुई है। फिर भी, सद्धर्मपरायण और सद्शील संपन्न साथी की विदाई सह लेना आसान नहीं है। क्योंकि संसार में जीव तो अनगिनत हैं व मनुष्य भी अरबों की संख्या में होने के बावजूद, भगवद्भक्ति परायण यानि–सच्चे अर्थ में दृढ़ स्वरूपनिष्ठा वाले जीव अधिक देखने को नहीं मिलते। उनमें भी स्वयं के सच्चे स्वरूप को पाकर, अपने परिचय में आते सभी जीवों को उस स्वरूप की लगन लगाने के लिए झूझते संत बहुत ही कम होने के कारण, उनकी चिरविदाई, सत्संगी समाज के लिए कसौटी रूप है।

ऐसी सख़्त कसौटी की पल में पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान हम सब को जरुरी स्थैर्य व धैर्य दें एवं श्री प. पू. भाईस्वामिजी को अपनी मूर्ति का शाश्वत् सुख प्रदान करें–यही हमारी सभी की, उन सर्वाधीश के चरणार्विंद में प्रार्थना है।

श्रीजी की सदैव मंगलमय मूर्ति में लीन हुए श्री प.पू. भाईस्वामिजी की प्रेरक स्मृति में हमने यहां सामूहिक प्रार्थना और धून्य रख कर कीर्तन किया है, उसे सूचित करने तथा श्रीजी महाराज की प्रीति को पाने के लिए सर्वथा अनुद्विग्न होने की विनती के साथ–

श्रीजी कृपाभिलाषी
श्री स्वामिनारायण गादी के आचार्य
श्री पुरुषोत्तमप्रियदासजी स्वामी के
जय श्री स्वामिनारायण !

✡✡✡✡✡

26-6-98
बफेलो-नायगरा
यू.एस.ए.

परम पूज्य प्रगट ब्रह्मस्वरूप काकाश्री के लाडले गुरुजी की सेवा में–

पूज्य भाईस्वामी और आपकी जोड़ अक्षरधाम की है, सो वे आपके साथ ही हैं। लेकिन काकाश्री ने और कोई सेवा करवाने के लिए फिलहाल उन्हें दूसरी जगह भेजा है। तो आनंद में रहनाजी.....

प.पू. बापू को खूब ही याद आ गई.....प्रगट ब्रह्मस्वरूप काकाश्री के पास बापू को ले जाने वाले सबसे पहले पू. भाईस्वामी थे.....

दिल्ली मंदिर में हम जब भी आते तब गतिस्थिरता से गंभीर, फिर भी आनंद करा कर अच्छी मजाक करवाते भाईस्वामी की स्मृति सहज हो जाती है।

पू. बापा के कृपा पात्र और पू. दासस्वामी के साथ भागवती दीक्षा प्राप्त करके सही अर्थ में आपके **'भाई'** बन कर सुन्दर जीवन जी गए और काकाश्री व सभी गुणातीत पुरुषों की प्रसन्नता प्राप्त करके गए.....
सभी भजन का बल लेकर उनकी आत्मा को बल दे सकें ऐसी प्रभु को प्रार्थना.....

दिनकर, बापू, भरतभाई, घनश्यामभाई, अश्विनभाई, डॉ. महेन्द्रभाई, परमार साहेब, विजय, संकल्प और सभी बहनों की ओर से जय स्वामिनारायण.....

✡

स्वामिश्रीजी 26-6-98
बफेलो-नायगरा
यू.एस.ए.

बफेलो से सारे भक्त मंडल की ओर से **भरत** के जय स्वामिनारायण स्वीकारना !
पू. भाईस्वामी के अक्षरवास होने का समाचार सुन कर एक धक्का-सा लगा।
प. पू. योगीजी महाराज के संतरत्नों में से एक,
दिल्ली-मंदिर की नींव में दबे हुए
और
दिल्ली-पंजाब मंडल के एक आधार स्तंभ के समान
व
प. पू. काकाजी की मर्जी के मुताबिक छत्तरपुर मंदिर में अद्भुत सेवा में खुद को याहोम करने वाले.....
प.पू. गुरुजी के एक पंख समान

पू. भाईस्वामी के अक्षरवास होने से हम भक्तगण एक खोट अनुभव करेंगे।

सो, भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामी और सभी गुणातीत स्वरूप सभी को खूब-खूब बल दें ऐसी अंतर की प्रार्थना के साथ– भरत, घनश्याम, अश्विन, हेमंत, डॉ. महेन्द्र, गिरीश, परमार, मम्मीबा, मामीबा, योगिनी, माधुरी, जयश्री, ईलाभाभी, पूनम, विजय, संकल्प सभी के पू. दिनकरभाई और पू. बापू की आज्ञा से जय स्वामिनारायण !

✡

स्वामिश्रीजी 27-6-98

परम पूज्य गुरुजी !

लंडन मिशन से पू. हिम्मतस्वामिजी ने खबर दी। धक्का-सा लगा, बापा के हम लड़के-हमने हमारा भाई खोया यूं लगा.....आँखे नम हो गई !

पू. भाईस्वामी के जाने से सबसे अधिक दुःख आपको हो वह स्वाभाविक है। वर्षों से आपको दिल्ली मंडल के विकास में साथ दिया। आपके साथ सेवक की अदा से रहे। कसनी झेली और आपके प्रति बापा जैसा-स्वरूपों जैसा भाव दृढ़ किया। उनसे जब-जब मिलना हुआ व गोष्ठी हुई तब आपकी और दिल्ली मंडल के भक्तों की महिमा की खूब बातें करते व सुहृद्भाव से संबंध देखकर प्रेम देते। प्रभु की आराधना करते-करते अपने आपको प्रभु में लीन किया और.....उनके जीवन की स्मृति करके सहज ही उन्हें वंदन हो गए।

खुद साधना करके,
जिन्हें बड़े मानें उनके सूचन स्वीकार करके,
देहभाव छोड़ कर सेवा करके,
जिन्होंने निज जीवन की जो दिव्य खूश्बू हम सभी साधकों के लिए रखी है उनका वह ऋण स्वीकार करके उन्हें वंदन करता हूँ और उनके जीवन द्वारा प्राप्त उपदेश को वर्तन में रख कर साधना मार्ग को उज्ज्वल करने हम सभी को बल मिले, ऐसी प्रार्थना करता हूँ।

अमेरिका-अनुपम मिशन से पू. बेरीस्टर, पू. जयेशभाई, पू. अरविंदभाई, पू. आर. डी. काका, पू. डॉ. विष्णुभाई, पू. राय साहेब, पू. जयंतभाई, पू. सुरेन्द्रभाई, पू. हरिहरभाई और सभी की ओर से सहृदयी **शांतिभाई** के जय स्वामिनारायण !

✡

28-6-98

महाराज के समय में सद्गुरु रामानंदस्वामी के समय के स्वामी मुक्तानंदस्वामी के बारे दो बात करी जाती थीं कि वो स्वामी यानि सत्संग की 'माँ' और.....महाराज ने स्वयं अपने मुँह से कहा था कि मुक्तानंदस्वामी की रहनी-करनी एक सरीखी अखंड और यह भी कहा कि एक रहणीय सत्संग रहना वो बहुत कठिन है। ये दोनों बात अगर किसी के जीवन में देखनी हों तो वो भाईस्वामी के जीवन में दिखाई पड़ती हैं।

मैंने आज इतने सारे वक्ताओं का श्रद्धांजलि के प्रवचन का लिस्ट सुबह से कराया था। उसके पीछे मेरी भावना भी यह है कि जैसे समीर ने बात करी-वो खुल्ले दिल का व्यक्ति है कि मुझे भाईस्वामी के बारे ऐसा चुभ गया था। मैं उसकी बात सुन कर बड़ा खुश हुआ कि उसने हिम्मत करके सभा में ये बात करी है, तो कईयों को भी कभी ऐसा हुआ होगा। जैसे कोठारीस्वामी ने बात करी कि भगवान के स्वरूप जहाँ होते हैं वहां जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म का काम चलता ही रहता है। कई प्रसंग बनते ही रहेंगे। कईयों को ऐसी गलतफहमियाँ हुई होंगी जैसे समीर को हुई। लेकिन आज ये बातें जो हुईं वह कोई नौटंकी का खेल नहीं था कि कोई यहां आकर कलाकारी से बात करके गया हो। तो कईयों के मन से वो चीज़ साफ हो गई होगी। **मेरी वेदना तो मैं खुद जानता हूँ।** कल ही मैंने वशी को बात करी थी कि मुझे ऐसी जगह पर काकाजी बैठा कर गए हैं कि गाल पर चपेट मार कर भी लाल रखे रखना है। लेकिन जैसे कहा जाए-**मेरा तो हाथ कट गया** और ये एकदम सही बात है। **इनके होते हुए मैं सच में खूब निश्चिंत था। लेकिन वो मूक सेवक थे।** इन्होंने कभी ऐसा शो नहीं करा कि गुरुजी का काम मैं निपटाता हूँ। वो उनकी बहुत बड़ी विशेषता थी। दूसरी बात–मेरे हर चरित्र में उन्होंने निर्दोषबुद्धि रखी है। हो सकता है शायद मैंने इनमें निर्दोषबुद्धि नहीं रखी हो–जबकि इनमें ऐसी कोई चीज नहीं थी, तब भी।

तो, यह घटना एकदम–यकायक बन गई लगती है, लेकिन अपने यहां कोई चीज़ एकाएक तो बनती नहीं है। वैल प्लान्ड में महाराज का कम्प्यूटर चलता है। वर्ना कितने समय से मल्कानी साहेब ने 'स्वामिनारायण ब्लीस' मेगेज़ीन्स मुझे भेजे थे। अगले दिन ही-यानि 25 को ही मेरे पास कैसे आ गए? और जब से हार्ट का ऑप्रेशन हुआ तब से मैं ज्यादा पढ़ता करता नहीं। कुछ चेकिंग वगैरह के लिए भी कोई भेजते हैं, तो ये लोग भी देखते हैं कि लापरवाही से गुरुजी चेक करके दे देते हैं। पर पू. संतस्वामी की अंतिम विधि का आर्टिकल मैंने 25 को ही बखूबी खूब ध्यान से पढ़ा और.....यह बात तो जो पुराने यहाँ बैठे हैं, समझ सकते हैं कि जो संबंध पू.

संतस्वामी का पू. प्रमुखस्वामी महाराज के साथ था, ऐसा ही सहसाथी रूप पू. भाईस्वामी का मेरे साथ गिना जाए। हाँ, इससे मैं यह नहीं कहता कि मैं पू. प्रमुखस्वामी महाराज की कक्षा पर हूँ; लेकिन एक संबंध समझता हूँ। सो, यह काम महाराज ने ही करा है। दूसरी तरफ यह भी है कि महाराज ने–काकाजी ने जो भी करा होगा वो हमारे हित में ही करा होगा–सब के हित में–भाईस्वामी के, मेरे, जिन-जिन के प्रकाश में ये बात आई होगी–इन सब के हित में ये बात हुई है। पर, जैसे कि राजू ने बात करी। समझ नहीं आता कि ये क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ? पर, एक बात बहुत पक्की है कि **काकाजी हमें खूब ऊँची कवायत देना चाहते हैं.....**

भाईस्वामी के कारण में निश्चिंत खूब था। दूसरी ओर मेरा ये नेचर भी है कि वैसे मुझे हर काम पंक्च्युअल चाहिए, अप-टू-डेट होना चाहिए। लेकिन मुझे पता चल जाए कि मेरा यह काम और कोई अच्छी तरह कर देगा तो मैं स्कीमींग कर जाऊँगा कि ये कर देता है तो मैं क्यों करूँ? आपने देखा होगा कि मैं कोई काम किसी को सौपूंगा तो दस बार देखूंगा–याद रख कर देखूंगा कि कहाँ तक पहुँचा? कहीं गड़बड़ तो नहीं हुई? जैसा मैं चाहता हूँ वैसा हो रहा है या बदल दिया? लेकिन जैसे की भाम्बरी को कोई काम सौंपा होगा, तो आपने देखा होगा कि कभी मैं उसे देखने-करने नहीं गया। क्योंकि–मुझे पता है कि जैसै मैंने कहा है वैसे और वो समय के अन्दर बिल्कुल वैसा कर देता है।

इसी तरह भाईस्वामी के होते हुए–कई भक्त आते-जाते और मुझे पता पड़ता कि ये भाईस्वामी के पास बैठते हैं, तो उनके बारे में बेफिक्र रहता। हो सकता है कईयों को इससे गलतफहमी भी हुई होगी कि गुरुजी हमारे लिए तो परवाह रखते नहीं। मैंने किया भी ऐसा है कि भाईस्वामी के साथ जो जुड़े हुए होंगे, उन्हें कहता कि तू भाईस्वामी के पास जाकर बैठ। कल की बात करता हूँ–एक भगत आया, वो फूट-फूट कर रोए। फिर मुझे कहा कि मैं जब भी आता था, तो आप मुझे कहते कि भाईस्वामी के पास जाकर बैठ। अब मैं कहां जाकर बैठूंगा? उसे तो यही कि गुरुजी की स्टाईल है कि अपने पास बैठने ही नहीं देते। 'मेरे पास नहीं बैठने देना था'–ऐसी बात नहीं थी। बात ऐसी थी कि मुझे पता था कि तू भाईस्वामी के पास बैठता है ना और भाईस्वामी इसको बखूबी संभाल रहे हैं और मेरा पहले से एक नेचर ही पड़ा हुआ है कि कोई मेरा काम कर लेता है, तो समझता हूँ कि इतना मेरा भार कम होता है। आज सभा में मैं ये बात इसलिए कर रहा हूँ कि जो ऐसे हैं वो यूं नहीं समझें कि गुरुजी हमें अटेन्ड नहीं करने वाले। मुझे मेरी जिम्मेवारियों का पूरा ख्याल है।

जो लॉस हुआ है वो तो पूरा हो नहीं पाएगा। पर, बहुत ऊँची कवायत हम लोगों को देने काकाजी ने यह घटना करी होगी। **हम अलग-अलग मन से थोड़े रहे होंगे, उनको एक करने के लिए ये घटना काकाजी ने करी होगी।** तो मेरी आप लोगों से यही प्रार्थना है कि क्या अब रोया ही करेंगे? आप जानते हो कि मैं भी सेन्टीमेन्टल (भावुक) खूब हूँ। परसों से मैं किस तरह ठीक रहा हूँ वो मैं जानता हूँ। शुक्रगुज़ार करो कि दासस्वामी वगैरह आए हैं तो मैंने जानबूझ कर मेरे दिमाग को इनके साथ एंग्एज़ रखा हुआ है कि कहीं मैं टूट ना जाऊँ? **भाईस्वामी ने जो मूक सेवा करी हुई है वो हम दस-बीस जनें भी नहीं कर पाएंगे।**

संतों ! मेरी खास ये बात खूब समझ कर रखना। काकाजी कहते कि ये सब अकेले हाथों काम नहीं हुआ है। **ये हकीकत है कि भाईस्वामी का 30 साल का लगातार साथ था।** दूसरे संत-सेवक तो आए और गए। लेकिन भाईस्वामी ने काकाजी की ओर निगाह रख करके–एक ही भावना से कि–काकाजी का यह सेन्टर है और मुझे इसके लिए जीना है। **मेरे गुरुभाई रहे, लेकिन इन्होंने हमेशा मेरे अन्दर स्वामिजी को या काकाजी को ही देखने की चेष्टा रखी**....यहां तक कि सेवक लोगों ने ध्यान नहीं रखा होगा कि गुरुजी ने खाना खाया कि नहीं खाया, लेकिन खाना खाने से पहले वे अचूक पूछ जाएंगे कि आपने खाना खाया? और.....उनको पता लगे कि गुरुजी ने नहीं खाया है, तो जब तक मेरी थाली नहीं आएगी वो एकदम खाना खाने भी नहीं बैठेंगे। जो संबंध पू. कोठारीस्वामी ने प.पू. स्वामिजी के साथ रखा है। मैं मानता हूँ कि मैं इस काबिल नहीं हूँ, लेकिन वो उनकी मैग्नानिमिटी थी।

तो मेरी आप सब को खूब विनती है–खास करके सुहृद्स्वामी और स्नेहलस्वामी को कि अब तुम दो मिलकर मुझे ऐसे हाथ दे दो कि यह कमी मुझे थोड़ी लगे। **सच में–ये दो संतों पर यह निर्भर है।** दूसरे तो, ये जैसे वर्ताव करेंगे वही फॉलो करेंगे या दूसरा पहलू यह भी बन सकता है कि ये बात यदि उनके दिमाग में फिट नहीं हुई तो आपसी दूरी बढ़ती जाएगी और वो प्रॉब्लम मेरे लिए बनेगा जो भाईस्वामी ने कभी होने नहीं दिया। आज प्रभाकर की बातों में से सब को खूब ख्याल पड़ गया होगा कि भाईस्वामी ने ये चीज़ कभी डेवलप होने नहीं दी। तो आज के दिन दूसरी कोई बात करनी नहीं है। समय भी खूब हो गया है। काकाजी होते तो कहा होता कि धन्यवाद है तुम लोगों को जो साढ़े चार घंटे से बैठे हुए हो और मुझे आज दुःख इतना ही है कि जो भाईस्वामी खाना खाए बिना आप कोई ना जाए यह ख्याल रखते-उनकी ही आज की सभा से आप लोगों को नाश्ता करा कर मुझे

वापिस भेजना है....तो मेरी क्षमा याचना है, पर आप सब नाश्ता ठीक से करके जाना.....और साहेब को भी विनती कि समय ना देखें और पूरे आशीर्वाद बरसा कर सब को बल देकर जाएं।

आज जब मैंने ये शब्द इस्तेमाल करा कि बरसा कर-वहां एक स्वामी की बात है कि जब तक बारिश बरसती है ना, तब तक उसकी महिमा नहीं होती। बारिश ना बरसे तब पता लगता है। इस तरह ये दो हाथों का भी ऐसा है–जब तक हैं, तब तक दो हाथों की कीमत पता नहीं लगती। लेकिन कोई हाथ कट जाए–बारिश बरसना बंद हो जाए तब पता लगता है। ऐसे थे भाईस्वामी.....वो कमी हमें महसूस ना हो ऐसे आशीर्वाद दें।

–प.पू. गुरुजी

✡

आज प.पू. भाईस्वामिजी की प्रार्थना सभा में 8 से 1 बजे– 5 घंटे कहाँ बीत गए, वो हमको महसूस नहीं हुआ है। उसकी जो कमी है वो भगवान हमें महसूस होने नहीं देंगे क्योंकि भगवान ने किया है। कोई आदमी ने कुछ नहीं किया है। उसकी स्मृति-उसकी याद जरुर आएगी, लेकिन भगवान का यह कार्य है–सो वे कमी महसूस नहीं होने देंगे। **हम सब की जिम्मेदारी बढ़ गई है।** सब के प्रवचन सुनने में-माहात्म्य की बात सुनने में, सबके हृदय में बहुत भाव आ गए।

दो दिन पहले रथयात्रा के अवसर पर सूरत में सभा चल रही थी हमारी। व्रतधारी विट्ठलभाई वहीं थे, उन्होंने अश्विनभाई से फोन पर बात करी। अश्विनभाई ने तुरन्त सभा में आकर बताया कि भाईस्वामी ने वहां अक्षरधामगमन किया है। तुरन्त मैंने अश्विन को बोला कि मुझे दिल्ली जाना है। फिर गुरुजी से-मल्कानी अंकल से बात होने के बाद मुंबई होकर इधर आया–**क्योंकि प्रसंग ऐसा** है। **दिल्ली सत्संग मंडल में ऐसा फर्स्ट इन्सीडन्ट है** और इतने प्यार से–भाव से मंदिर के सभी मुक्तों की सेवा करी है। तो सब बल में तो होंगे ही, लेकिन ऐसे अवसर पर इकट्ठे होकर प्रभु को हम प्रार्थना करें। ये प्रार्थना के लिए कोठारीस्वामी, दासस्वामी, मैं, वासुभाई, हरि, पीटर को बोला और हम सब इकट्ठे हुए हैं।

भगवान स्वामिनारायण जब थे तब उन्होंने परमहंसों को बोला कि सब गांव–गांव घूम कर सत्संग की बात करो। सत्संग का प्रचार करो। संतों निकले, फिर वापिस आए। वो बोले कि आप बोलते हो कि गांव-गांव घूम कर सत्संग की बात करो, सत्संग कराओ। लेकिन हमें संस्कृत नहीं आती है। वेद-उपनिषद् का कुछ ज्ञान नहीं है। हम ज्ञान की बातें यूं बोल पाते नहीं हैं। हम कैसे सत्संग करवाएंगे? स्वामिनारायण भगवान ने सबको बिठाया और बोले–आपको बोलना नहीं पड़ेगा, आपका वर्तन बात करेगा– जाओ ! भाईस्वामी के वर्तन की बात जो हुई, ये सब के पास से ऐसी सुनी। राकेशभाई, विनोद, प्रभाकर, समीर, ओमप्रकाश, मल्कानी अंकल–सबने जो बात बताई, ऐसा वो मुँह से नहीं बोला–उसकी क्रिया-वर्तन ने जो काम किया है, वे बातें हमने सुनी।

तो वर्तन क्या था? वो नाश्ता कराते थे, हमारे पास बैठते थे, वे चाय-पानी कराते थे–वो वर्तन था? वो तो कोई भी जगह जाएंगे, देखभाल होती ही रहती है। वो क्रिया की बात नहीं है, लेकिन उसका जो वर्तन था हमारे प्रति नाश्ता कराने का, बैठ कर बात करना–उसके पीछे असल में उनकी कोई एक्सपेक्टेशन नहीं थी। **प्रभु के मुक्त आए हैं उनकी मैं क्या सेवा करूँ, यह भाव से जो सेवा करते थे, हमें बुलाते थे; कुछ करवाते थे, हृदय से–प्रभु के भाव से वो काम किया करते थे। उसकी असर हमारे हृदय में होती थी** और इस बात से सब को आँसूं आ ही जाएं। भाव है तो बह ही जाते हैं। वो भाव से उनका दर्शन करने का सबको मौका मिला।

मैंने कल बताया 1966 के बाद हम संत लोग शुक्ल तीर्थ शिविर के लिए पहली बार गए थे। वैसे बापा की कृपा से मुझे स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी, बा से बहुत भाव ! काकाजी के प्रति मुझे बहुत प्रेम था। वहाँ पहली बार मैंने देखा–शुक्लतीर्थ में बिजली नहीं थी और इतनी गर्मी थी, शाम का समय था; उस समय भाईस्वामी ने काकाजी की जो सेवा करी, तब से उनके प्रति मुझे बहुत भाव था। क्योंकि–जिन प्रभु के प्रति हमें भाव है–उनकी प्रसन्नता वाले जो मुक्त हों उनके प्रति अपने आप भाव हो जाता है। भाईस्वामी ऐसे भाव वाले-भक्ति वाले थे। गुरुजी ने बताया 'माँ' थे और एक बात कोठारीस्वामी ने बताई कि वो कोई बात किसी को बताते ही नहीं थे। ये सब तो होता ही रहता है, हमारा जीवन है। और स्वामिनारायण भगवान ने बोला है कि सारा सत्संग-जहां हम रहते हैं, प्रगति करते चैतन्यों से भरा हुआ है और ऊपर उठने के लिए ऐसे प्रसंग भी बनते रहते हैं। कोठारीस्वामी का भी एक गुण है। वर्ना उन्होंने उनको पूछा होता कि दिल्ली मंदिर में क्या चलता है? एक बार, दो बार, पाँच बार में तो कोई न कोई बात निकल ही जाए। उनको भी धन्यवाद कि इतनी मित्रता थी, फिर भी उन्होंने पूछा-करा नहीं। **ये हमें समझने की बात है**–याद रखो। संतपुरुष का जो जीवन है, संतपुरुष के जीवन का जो व्यवहार है–वो उपदेश देता है। संतपुरुष का मौन भी हमें उपदेश देता है। ये बात से हमें भी सीखने को मिलता है कि महिमा की

बात में रस रखो। कोई भी ऐसी बातों में इन्ट्रेस्ट मत रखो। तो उससे माहौल में भी एक दिव्यता, एक निर्दोषता बढ़ती जाएगी। अपने आप सबका काम होता रहेगा।

गुरुजी ने हम सबको एक बात बताई कि हम सब की एक जिम्मेदारी है। जिस तरह **भाईस्वामी के होते हुए गुरुजी को एक निश्चिंतता थी, वो निश्चिंतता उन्हें दिलाने की हम सबकी फर्ज है, भक्ति है।** गुरुजी ने बताया कि मैं किसी को कोई काम सौंपू तो मुझे पूछना पड़े कि किया या नहीं किया, गया कि नहीं गया और भाईस्वामी को काम सौंपू तो काम हो ही जाएगा और किस तरह हो जाएगा–जैसा बोला होगा, वैसा होगा। हमारे एक साधक ने बताया कि गुरु की आज्ञा में विचार नहीं करना। इधर से स्टेशन पर जाओ कहें–तो, वहां जाने के लिए क्यों जाना है वो सोचना नहीं। लेकिन वहाँ अच्छी तरह से कैसे जायें वो सोचना चाहिए। तो आज्ञा देते हैं उसको ठीक तरह से सोच कर–बुद्धि का इस्तेमाल करना चाहिए। वो काम करते थे भाईस्वामी !

आज हम सब संकल्प करें कि–गुरुजी, आप जो भी हमें आज्ञा करें वो पालें **वही सही भाईस्वामी के प्रति श्रद्धांजली है। भाईस्वामी की वही स्मृति है।** भाईस्वामी के साथ हम जो रहे, उनकी वही हम पर कृपा है। तो, वो **गुरुजी को निश्चिंतता करवानी है** कि जो भी है महाराज, स्वामिजी, काका ने किया है–उसे हम स्वीकार करें, लेकिन जो हो रहा है उसमें **हम सबको इकट्ठे होकर आपको निश्चिंतता देनी है। आपको कुछ टेन्शन नहीं रहना चाहिए।** टेन्शन क्या रहता है? कोई हरिभक्त आए तो उसे पूछना कि–आपने पानी पिया, चाय पिया? स्वामिनारायण भगवान ने यह पृथ्वी पर आकर भक्ति मार्ग का प्रवर्तन किया है। गुरुजी ने यह सोचा कि ये बहनें-भाई यहां पर हैं, अब घर पर जाकर रसोई बनाएंगी, तो शाम हो जाएगी। तो उनकी चिंता थी। पर, लंच के लिए आप जो भी दोगे वो हमारे लिए प्रसाद होगा और हम तृप्त हो जाएंगे। प्रभु के भक्त प्रभु के दर्शन के लिए आते हैं। पर, भक्तों की सेवा करना उन्होंने अपना फर्ज माना कि इनके लिये हमें क्या करना चाहिए? यह जो विचार उन्हें आते हैं–उस विचार को एग्ज़ीक्यूट करने के लिए हम (भक्तों) उसकी मशीनरी हैं। गुणातीतानंदस्वामी के पास भगतजी महाराज ऐसे थे तो वे गुणातीत रूप बन गए। वो कैसे बन गए? तो गुणातीत की जो वृत्ति है, वो उसकी प्रवृत्ति बन जाती थी। वो गुणातीत के अंतर्यामी बन गए थे। एक मेहमान आए और बैठ गए थे। गुणातीतानंदस्वामी ने उसकी ओर देखा, तो तुरन्त भगतजी सभा में से खड़े हो गए। पानी का गिलास लाकर दिया और पूछा। अगर भगतजी खड़े नहीं होते तो वो खुद उठकर उसको पानी देते। उनकी **अनुवृत्ति की भक्ति से हम अपने भावों से पर हो जाते हैं।** भाईस्वामी ने ये करा। **भाईस्वामी गुरुजी के पास नहीं बैठे, लेकिन गुरुजी का विचार, आदेश, आज्ञा–उसके मुताबिक उनकी देह के भाव को प्रवृत्त किया।** वो ही करना है।

चाहे संसार में हो, चाहे मंदिर में हो–सबको काम करना है। जैसे डॉक्टर आधा घंटा काम करते हैं उनको ज्यादा पैसा मिलता है। एक मजदूर है वो सारा दिन खेत में काम करता है–पसीना बहाता है, उनको कम मिलता है? तो कोई पूछे क्यों इतना फर्क है? डॉक्टर आता है तो उसे चाय-नाश्ता कराते हैं, फिर भेंट देते हैं। मजदूर को तो झिड़कते हैं और पैसे भी कम देते हैं-ऐसा क्यों? क्योंकि मजदूर बुद्धि इस्तेमाल नहीं करता। वो शारीरिक श्रम करता है और डॉक्टर ने 15-20 साल तपस्या करी है–इसमें लय होकर। उसका उसे पैसा मिलता है.....गुणातीतानंदस्वामी कहते थे कि हमें प्रभु के साथ रहकर उनकी प्रसन्नता के लिए समझदारी से पूरा तंत्र चलाना है। वो प्रभु की प्रसन्नता मिलने से हमारे जीवन में सुख, शांति, आनंद के अलावा सब चला जाएगा। भाईस्वामी ने अपने जीवन से यह बताया.....**सबकी जिम्मेदारी अब बढ़ गई है।** इसलिए प्रार्थना सभा में हम संकल्प करें कि हम सब इकट्ठे होकर काम करेंगे। वो अकेले भाईस्वामी थे। **हम सब इकट्ठे होकर सामूहिक काम करेंगे वो भाईस्वामी के प्रति श्रद्धांजली होगी।**

जीसस क्राईस्ट को क्रास पर चढ़ाया गया। उनके 12 शिष्य थे.....शिष्यों को भीतर में इतनी चोट लगी कि जो जीसस इतने महान थे–जिसने हमारे लिए इतना किया, उसके लिए हम कुछ नहीं कर पाए। तो 12 शिष्य इकट्ठे हो गए और बोले कि साथ में मिल कर जो भी करना है, जीसस के लिए करना है। वो 12 शिष्यों में से इतनी ताकत प्रकटी कि पूरे संसार में क्रिश्चयनिटी फैल गई। यूं एक यूनीटी आई ! तो **हम इकट्ठे होकर संकल्प करें कि हम गुरुजी को निश्चिंत बनाएं।** गुरुजी के हृदय में किसी प्रकार की चिंता ना रहे। **हम संतों, बहनें, व्रतधारी भाईयों मिल कर संकल्प करें, हम सब आपके साथ हैं।**

गुरुजी अपने आप खुद यहां नहीं आए हैं। उन्होंने नक्शा लेकर नहीं देखा था कि मैं दिल्ली जाकर काम करूँ। दिल्ली कैपिटल है, हिन्दुस्तान का कारोबार इधर चलता है, तो भारत में सत्संग फैल जाएगा। शास्त्रीजी महाराज ने नंदाजी को बोला था कि दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना वाला सत्संग बनाना है। काकाजी उस टाइम पर हाज़िर थे। उन्होंने देखा कि उनके गुरुदेव का संकल्प है, इच्छा है और **गुरु के संकल्प को आगे बढ़ाना वो शिष्य का बड़ा शिष्यत्व है।**

गुरु के संकल्प को पूरा करने काकाजी ने गुरुजी को यहां भेजा। गुरुजी भी काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, योगीजी महाराज के प्रति भक्ति वाले हैं। भाईस्वामी इसमें जुड़ गए। वो संकल्प में हम सब आ गए। तो हम सब बहुत कृपा वाले हैं। हम सब इकट्ठे होकर प्रार्थना करें, संकल्प करें–हे महाराज, हे गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी की कृपा–आज्ञा से गुरुजी यहां आए हैं, बड़ा काम कर रहे हैं। भाईस्वामी की स्मृति हमें जरूर होगी लेकिन उनकी खोट महसूस ना हो ऐसी भगवान को हम प्रार्थना करें। ऐसा संकल्प भी करते हैं कि भाईस्वामी ने गुरुजी को जैसे निश्चिंत बनाया, जो भक्त आए उनकी सेवा करी। पुरी साहब ने जैसै बताया कि रात को 2 बजे–3 बजे दरवाजा बंद करके, किसी ने भोजन लिया या नहीं, वह देखभाल रख कर पूरी जिम्मेदारी निभाई। ऐसे हम सब इकट्ठे हो जायें–**हम मंदिर के मेहमान नहीं, मंदिर का पार्ट हैं। वो पार्ट अच्छी तरह चले तो सारी मशीनरी अच्छी तरह चलती है।** हम सब इकट्ठे होकर पूरा दिव्यभाव-निर्दोषभाव रख कर करें और इस तरह हम भाईस्वामी को हृदय में प्रकट करते रहें। प्रकट तो हैं, लेकिन कार्य में प्रकट करते रहें। **गुरुजी को निश्चिंतता देने से प्रभु की प्रसन्नता हमें मिलेगी ही। सभी के जीवन में पूरी-पूरी प्रभुता आ जाएगी।**

इस अवसर पर यही प्रार्थना है। गुरुजी की भी हैल्थ बहुत अच्छी रहे। सोये नहीं हैं, दो दिन से। योगीजी महाराज बोलते थे कि हमारा शरीर लोहे का, पीतल का, लकड़ी का नही–हमें भी कुछ होता है। **वो भी महसूस तो करते हैं, लेकिन भक्तों के लिए अपने प्रति वो ध्यान नहीं देते हैं।** देह से पर रहते हैं। **हमें उनकी जरूरत है।** उनके दर्शन से, बातों से–उनके सान्निध्य में इस तरह रहे जैसे भाईस्वामी गुरुजी में, काकाजी, स्वामिजी और योगीजी महाराज में लीन हो गए। जीवन कितना जिया वह महत्व का नहीं है, कैसा जिये, कैसे प्रसन्नता प्राप्त करी वो हमको उपदेश देकर अपने जीवन से सिखा कर गए। उस रास्ते पर हम चल कर सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता के पात्र बनें यह मंगलकारी अवसर पर प्रार्थना !

–प.पू. साहेब

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 4.8.98	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि. 7.8.98	शुक्रवार	–	श्रावणी पूर्णिमा, राखी
(3)	दि. 15.8.98	शनिवार	–	जन्माष्टमी
(4)	दि. 18.8.98	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting** B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393